“उत्तर प्रदेश में प्रचलित लोकनाट्यों में शास्त्रीय तत्व”

दयालबाग़ एज्युकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनीवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा से संगीत में पीएच० डी० की

उपाधि हेतु

शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा

2017

निर्देशक

डॉ० गौतम तिवारी
सहायक प्रवक्ता संगीत (गायन)
संगीत विभाग

शोधार्थिनी

सोनिका बघेल

विभागाध्यक्ष

प्रो० एस० के० सतसंगी
संगीत विभाग

संकाय प्रमुख

प्रो० जे० के० वर्मा

कला संकाय (संगीत विभाग)

दयालबाग़ एज्युकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)

दयालबाग़, आगरा– 282005

उत्तर प्रदेश में प्रचलित लोकनाट्यों में शास्त्रीय तत्व

भूमिका :

भारत वर्ष में नाट्यकला का इतिहास बहुत पुराना माना जाता है। विश्व का सबसे प्राचीन वेद इस बात की पुष्टि करता है कि जब कभी मनुष्य द्वारा साहित्य की रचना की गई तो वह काव्य रूप में की गई। चाहे वह साहित्य लौकिक हो या धार्मिक। इस काव्य को पुनः दो वर्गों में विभाजित किया गया– सुनने योग्य एवं देखने योग्य। सुनने के लिये श्रवण साहित्य का निर्माण हुआ तथा देखने के लिये नाट्य साहित्य का।

लोकनाट्य के विकास चिह्न ऋग्वेद के कतिपय सूत्रों में यम और यमी, पुरूरवा और उर्वशी के संवादों द्वारा भी प्राप्त होते है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि इन्हीं संवादों से प्रेरणा ग्रहण करके लोगों ने नाटक की रचना की और नाट्यकला का विकास हुआ। यथासमय भरतमुनि ने उसे शास्त्रीय रूप प्रदान किया। नाट्यकला के विकास के सन्दर्भ में ऐसा भी मानना है कि ब्रह्मा ने देवताओं के आग्रह करने पर उनके मनोरंजन के लिये नाट्य की रचना की। इसके लिये ब्रह्मा ने चारों वेद– ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद से क्रमशः पाठ्य, गान, अभिनय एवं रस लेकर 'नाट्यवेद' की रचना की। गोस्वामी बल्लभाचार्य को कृष्णभक्ति के प्रचार एवं प्रसार का श्रेय जाता है। ये भक्ति आन्दोलन के प्रवर्तक थे। इनके अनुयायियों ने भागवत कथा के दशम स्कंध की कथा को अभिनय द्वारा प्रस्तुत किया। जिसमें श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र को वर्णित करके अभिनय के माध्यम से जनता के समक्ष सजीव चित्रण किया गया है।

इसके बाद श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का अभिनय मन्दिरों, मठों तथा अन्य स्थानों पर किया जाने लगा। परिणामस्वरूप इसको देखने के लिये हजारों की संख्या में लोग एकत्रित होने लगे और आगे चलकर भगवान की इसी प्रारम्भिक लीला ने 'रासलीला' का रूप धारण कर लिया जो आज भी मथुरा वृंदावन में प्रसिद्ध है। इस प्रकार भक्ति आन्दोलन के प्रभाव से उत्तर–प्रदेश में दो लोकधर्मी नाट्य परम्पराओं का विकास हुआ– 'रामलीला' और 'रासलीला'।

इसी समय बंगाल के चैतन्य महाप्रभु ने कृष्ण भक्ति का प्रसार किया। इन्होंने अपने अनुयायियों के साथ अनेक तीर्थस्थानों पर कीर्तन एवं यात्रा की। धीरे–धीरे इन यात्राओं और कीर्तनों ने लोकनाट्य का

रूप धारण कर लिया जिसमें ईश्वर की लीलाओं का मंचन किया जाता था। इस प्रकार लोकनाट्यों का लोकजीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया।

साथ ही इन लोकनाट्यों का कथानक प्रायः ऐतिहासिक, पौराणिक या सामाजिक रखा गया। धार्मिक कथावस्तु को लेकर भी अनेक नाट्य खेले गये तथा लोक से सम्बन्धित उत्सवों, अवसरों तथा मांगलिक कार्यों जैसे विवाह संस्कार आदि कार्यों के समय इनका आयोजन किया जाने लगा।

चौदहवीं शताब्दी से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तक भारतीय भाषाओं में विभिन्न लोकनाट्यों का विकास हुआ। आज अलग–अलग प्रदेशों में लोकनाट्यों को भिन्न भिन्न नामों से जाना जाता है जैसे– उत्तरी भारत में रामलीला, रासलीला, भगत, स्वांग, नौटंकी राजस्थान में ख्याल, महाराष्ट्र में तमाशा, बिहार में विदेशिया, मध्य प्रदेश में नाचा, गुजरात में भवाई, एवं बंगाल में जात्रा आदि ऐसे लोकनाट्य है जो अपने अपने प्रदेशों की संस्कृति को समेटे हुये है।

उत्तर प्रदेश जिस प्रकार अपनी सांस्कृतिक धरोहर उत्सवों, मेलों आदि के लिये प्रसिद्ध है ठीक उसी प्रकार यहाँ के लोकनाट्य, लोकगीत एवं लोक संस्कृति भी अपने आप में एक प्रमुख स्थान रखती है एवं समृद्ध है। यहाँ के लोक नाट्यों में प्रमुख रूप से भगत, स्वांग एवं नौटंकी प्रसिद्ध है।

इन लोकनाट्यों के विषय पर समय–समय पर बहुत से प्रबुद्ध लेखकों ने अपने विचार प्रस्तुत किये तथा यथासंभव इन्हें संग्रहीत करने का भी प्रयास किया है जैसे–

पुस्तक 'भारतीय लोकनाट्य' जो डॉ० वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी द्वारा रचित है। इसमें लेखक ने भारतीय लोकनाट्यों के रूपों के स्वरूप और उसके संघर्ष को दिखाया है।

इसी प्रकार लेखक हरीश देवनाणी द्वारा रचित पुस्तक 'सिन्धी लोकनाट्य परम्परा' में लोकनाट्य 'भगत' की परम्परा एवं काल एव 'भगत' के दौरान प्रस्तुत होने वाली लोककथाओं और प्रसिद्ध भगत कलाकार के विषय को दर्शाया गया है।

'ब्रज–रास में संगीत (उत्पत्ति, विकास और स्वरूप)' आरती श्रीवास्तव द्वारा रचित पुस्तक है। इसमें इन्होंने ब्रज रास का उद्भव, विकास, दार्शनिक पक्ष स्वरूप और लीलागत तत्वों का सारगर्भित विवेचन प्रस्तुत किया है।

विषय का प्रादुर्भाव :

उत्तर प्रदेश के कानपुर क्षेत्र की प्रसिद्ध लोकनाट्य विधा नौटंकी, हाथरस का स्वांग एवं ब्रजभूमि का भगत आदि लोकनाट्य विभिन्न, सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में अपने अपने प्रदेश के विभिन्न प्रभावों को ग्रहण करती हुई अपनी मौलिकता एवं प्रादेशिक पहचान बनाये हुये है। साथ ही ये विधाएं जन सांस्कृतिक उत्थान का स्त्रोत और संप्रेषण का ज़रिया भी बनी हुई है अतः इस विरासत को हमें बचाना ही नहीं बल्कि आगे भी बढ़ाना है।

इस संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है कि अनेक परिवर्तनों तथा प्रयोगों के बाद भी इन लोकनाट्यों में अनेक ऐसे तत्व मिलते हैं जिनकी जड़ें भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र तथा उसके बाद के ग्रन्थों में मिलती हैं।

मंच सज्जा, वेशभूषा, अभिनय, संवाद, संगीत तथा संगीत वाद्य प्रयोग आदि सभी तत्व रूप प्राचीन परंपरा से होकर आये हैं। परम्परा में ये तत्व हमें कितने यथारूप प्राप्त हुये हैं तथा इनमें कितना परिवर्तन हुआ है, वे कौन से कारक हैं जो इन परिवर्तनों की पृष्ठभूमि का निर्माण करते हैं – यह सभी बिन्दू गहन अध्ययन का विषय हैं। इन्हीं बिंदुओं के अध्ययन हेतु शोधार्थी ने निम्न विषय का चयन किया है।

समस्या कथन :

''उत्तर प्रदेश में प्रचलित लोकनाट्यों में शास्त्रीय तत्व''

शोध विषय में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या :

लोकनाट्य एवं शास्त्रीय तत्व

- **लोकनाट्य**

लोकनाट्य दो शब्दों से मिलकर बना है लोक और नाट्य। लोक से तात्पर्य उस जनसमूह से है जिसमें धर्म, समाज संस्कृति आदि के संस्कार विद्यमान होते हैं तथा नाट्यशब्द नट् नर्तने धातु से 'ष्यय' प्रत्यय करने पर बनता है। जिसका अर्थ है नर्तन, अभिनय, वेशभूषा, स्वांग तथा अनुकरणात्मक

अभिनय। इस प्रकार लोकनाट्य शब्द का अर्थ उस विधा से है जो लोक रंगमंच पर कथोपकथन, अभिनय, संगीत आदि के द्वारा प्रस्तुत की जाती है।

- **शास्त्रीय तत्व**

शास्त्रीय तत्व से तात्पर्य किसी भी विषय से संबंधित उन तत्वों के अध्ययन से है जो हमें प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में प्राप्त होते हैं। संगीत तथा अन्य कलाओं को मौलिक रूप में जानने और अध्ययन करने के लिये यह ग्रन्थ आधार रूप माने जाते हैं। संगीत, नाट्य कला और उससे सम्बन्धित अन्य कलाओं के लिये नाट्यशास्त्र को आदि ग्रन्थ माना गया है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. विभिन्न लोकनाट्यों के इतिहास और विकास का अध्ययन करना।
2. इन लोकनाट्यों के सांगीतिक तत्वों का अध्ययन करना।
3. लोकनाट्यों के इतिहास में शास्त्रीय तत्वों की भूमिका का अध्ययन करना।
4. लोकनाट्यों में शास्त्रीय तत्वों में होने वाले परिवर्तन तथा उनके कारकों का अध्ययन करना।

विषय परिसीमांकन :

समय एवं कार्य सीमा को देखते हुए शोधार्थिनी अपने शोधकार्य के अन्तर्गत केवल उत्तर प्रदेश में प्रचलित संगीत लोकनाट्यों में शास्त्रीय तत्वों का विस्तृत अध्ययन करेगी।

अध्ययन के स्त्रोत व विधि :

शोधार्थिनी विभिन्न पुस्तकालयों में उपलब्ध विविध ग्रंथों, पत्रिकाओं एवं पुस्तकों का अध्ययन करेगी तथा संगीत जगत के विद्वानों से शोधकार्य सम्बन्धी विषय पर उनके विचारों को भी संग्रहीत करेगी। इसके

साथ ही इस विषय से जुड़े कलाकारों को साक्षात्कार करके उनसे शोध सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करेगी।

अध्ययन की रूपरेखा :

समस्त विषय सामग्री से प्राप्त संकलित तथ्यों का अध्ययन एवं विश्लेषण निम्न अध्यायों में किया जायेगा–

अध्याय 1. सम्बन्धित विषय का साहित्यिक सर्वेक्षण।

अध्याय 2. लोकनाट्य का इतिहास

अध्याय 3. उत्तर प्रदेश में प्रचलित लोकनाट्य

अध्याय 4. लोकनाट्य के संगीत में शास्त्रीय तत्व

अध्याय 5. लोकनाट्य के अन्य तत्वों में शास्त्रीय तत्व

अध्याय 6. निष्कर्ष

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय लोकनाट्य– डॉ० वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी।
2. ब्रज–रास में संगीत– आरती श्रीवास्तव।
3. हिमाचली लोकनाट्य धाज्जा– डॉ० परमानन्द बंसल (सांस्कृतिक एवं सांगीतिक अध्ययन)
4. लोकनाट्य स्वांग कल और आज– डॉ० पूर्णचन्द शर्मा।
5. भारतीय लोकनाट्य स्वांग– डॉ० हिमांशु द्विवेदी।
6. सिन्धी लोकनाट्य परम्परा– हरीश देवनाणी।